मेलबोर्न–गाजियाबाद
नवम्बर २३, २००७

सन्देश संख्या १२६

जीवन का एक आयाम

गुरू आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैण्ड में यात्रा पर थे और न्यूजीलैण्ड के दक्षिणी द्वीप के क्राइस्ट चर्च से उत्तरी द्वीप के ऑकलैण्ड तक की १० दिनों की उनकी कारवाँ–यात्रा अभी–अभी समाप्त हुई है । एक शिष्य के साथ हुई लम्बी एवं विस्फोटकारी दूरभाष–वार्ता के दौरान उन्होंने उस सुन्दर देश के आश्चर्यजनक दृश्यों का वर्णन किया जो मार्ग में दृष्टिगोचर हुआ था । पर्वत–श्रेणियाँ, घाटियाँ, समुद्र, विशाल–झीलें, हिमनदियाँ, घास चरती भेंड़ें एवं गायें, चारागाहें, गायें तो इतनी अधिक संख्या में कि गुरू ने कहा, ''कृष्ण शायद यहीं रहते थे''– इन सभी का वर्णन, हमेशा मुक्त रहने वाले शरीर द्वारा शिशुवत–आश्चर्य के साथ किया गया । गुरु–शरीर के लिए यह लम्बी यात्रा शारीरिक रूप से कदायी थी किन्तु वह शरीर जीवन के साथ इतना सामंजस्य में था कि शारीरिक कष्ट एवं असुविधायें गौण हो गयीं । श्रीमद्भगवद्गीता में सर्वव्यापी चैतन्य अर्थात् कृष्ण ने जिस स्थितप्रज्ञ का वर्णन किया है, वह शरीर उसका जीवन्त उदाहरण है।

उस सम्पूर्ण वार्ता के दौरान विस्मयकारी सत्संग हो रहा था और शिष्य एवं गुरु के शरीर में एक समान और साथ–साथ लगातार विस्फोट हो रहा था किन्तु वह सब अनुक्रमिक काल के आयाम से परे था ।

गुरू को जब इसका बोध हुआ तब उन्होंने शिष्य से अनुरोध किया कि वह इन विस्फोटों को एक सन्देश के रूप में प्रस्तुत करें । नीचे उन्हीं विस्फोटों की शाब्दिक अभिव्यक्ति की प्रस्तुति का प्रयास है जिन्हें वस्तुतः शब्दों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता ।

गुरूचरणों में श्रद्धा सहित अर्पित.....

इन पर मनन करें :

जीवन सर्वव्यापी अस्तित्व है जो विविध एवं अद्वितीय भौतिक शरीरों के रूप में स्वयं को अभिव्यक्त करता है । यह विविधता एवं दिव्यता से परिपूर्ण है। मानव शरीर में मन जीवन से भिन्न है, यह अनुबंधित अनुभवों के जाल में केवल फँसाव है तथा उसी के अन्दर की आपाधापी है । यह द्वैत के अन्धकार में विखण्डित होता है और जीवन की दिव्यता को अपवित्र करता है ।

जीवन की रुचि न दूसरों को प्रभावित करने में होती है और न ही दूसरों से प्रभावित होने में । जीवन तो केवल समझदारी की ऊर्जा में होता है । प्रभावित होना या प्रभावित करना तो मन की गतिविधि है और मन जीवन नहीं है । मन समझदारी की ऊर्जा का अभाव है और इसीलिए पाप है जबकि जीवन समझदारी की ऊर्जा में होना है और इसीलिए पुण्य है । मन के रूप में ''मैं'' प्रभावित करना चाहता है और मन के रूप में ''तुम'' अपनी सकारात्मक या नकारात्मक इच्छाओं के लिए प्रभावित होना चाहता है । इसी कारण हमलोग राजनेताओं, पुरोहितों एवं झूठे गुरुओं के पाखण्ड के शिकार हो जाते हैं ।

जो शरीर समर्पण भाव में होता है उसमें शायद अन्तः प्रेरणा होती है । वहाँ प्रभावित करने या होने का प्रश्न ही नहीं उठता ।

उत्प्रेरण और उत्प्रेरित होना, दोनों स्वतः घटित होते हैं जबकि प्रभावित करना और प्रभावित होना, दोनों किया जाता है अर्थात् इनमें कर्त्ता होता है । अन्तःप्रेरणा स्वतंत्रता और गुरू–ऊर्जा से प्राप्त होने वाली ध्यानशील अवस्था के परिणामस्वरूप होती है, जबकि प्रभावित करना या प्रभावित होना, भय और लोभ से उत्पन्न प्रयोजनों के कारण होता है ।

जीवन को दास बनाने की मन की प्रवृत्ति के कारण ही प्रभावित करने या प्रभावित होने की घटना होती है और जिसके परिणामस्वरूप जीवन जीने की प्रक्रिया ही व्यर्थ हो जाती है । वस्तुतः मन मृत्यु है और निर्मन जीवन है ।

जीवन विविधतापूर्ण एवं दिव्य है । यह विभाजित नहीं, पूर्ण है । प्रत्येक शरीर पूरी मानवता है । यदि इसे समझ लिया जाय तब प्रभावित करने या प्रभावित होने का प्रश्न ही कहाँ उठता है ? जब शरीर जीवन के साथ एकात्मक सामंजस्य में होता है अर्थात् जब अलगाव, विभाजन या द्वैत नहीं होता तब कौन प्रभावित करेगा और कौन प्रभावित होगा?

मन की चालबाजी में फँसकर, इस सरल सत्य को कोई नहीं समझता क्योंकि ''सुनना'' और ''देखना'' होता ही नहीं, केवल तुलना करना और निष्कर्ष निकालना होता है ।

यहाँ ''सुनना'' का अर्थ है, ऐसा कुछ भी नहीं करना जो समझदारी की ऊर्जा में बाधक हो । ऐसा कुछ भी नहीं करना जो ''देखना'' और ''साझा करना'' में हस्तक्षेप हो । ''सुनना'' गुरू के शब्दों के प्रति जागरण में होना है, उसमें कोई कर्म नहीं है । ''सुनना'' घटित होने के लिए व्यक्ति को परम अकर्म में होना होता है । ''सुनना'' के जागरण में होने के लिए अंग्रेजी शब्द है – LISTENING । गुरु शरीर द्वारा हाल ही में यह कहा गया है: ' LISTENING ' का अन्तिम तीन अक्षर है – ''I-N-G'' और यह तुमको कह रहा है कि ''I'' is Not Good to Listen।

जीवन के आयाम में अवस्थित सद्गुरु केवल समझदारी साझा करते हैं और वैसे सद्शिष्य के साथ मिलकर सत्य–दर्शन करते हैं जो जीवन के प्रति उपलब्ध है । सद्गुरु कभी भी प्रभावित नहीं करते और सद् शिष्य कभी भी प्रभावित नहीं होता ।

।। जय गुरु ।। ।। जय जीवन ।।